बैलेस्ट वॉटर का खतरा ?

वो क्या हैं

बैलेस्ट वॉटर के खतरे क्या हैं ?

बैलेस्ट वॉटर, जहाज का वो पानी है जिसे समुद्री-यात्रा शुरू करने से पहले संतुलित रखने के लिए खाली जहाजों पर लादा जाता है. इस पानी के साथ-साथ, कुछ छोटे समुद्री-जीव भी चले जाते हैं जो खतरनाक भी साबित हो सकते हैं.

जहाज जब अपनी मंज़िल पर पहुंचता है, समुद्री जीवों सहित बैलेस्ट वॉटर को निकाल दिया जाता है और माल, जहाज पर चढ़ाया जाता है. तब कुछ समुद्री-जीव, आसपास के पानी में अपना डेरा जमा लेते हैं. अपनी जीवसंख्या बढ़ाना शुरू कर देते हैं.

दरअसल यही समुद्री जीव ढेर सारे खतरे पैदा कर सकते हैं.

समुद्री-जीवों की ऐसी हज़ारों जातियां हैं जिन्हें शायद बैलेस्ट वॉटर ही अपने साथ लाये हैं. इन समुद्री-जीवों में से कुछ तो हितकारी होते हैं लेकिन अन्य, विनाशकारी कीट बन गये हैं जिन्होंने समुद्री पर्यावरण के लिए खतरा पैदा कर दिया है. दुनिया भर में, समुद्री जैविक-आक्रमण करनेवाले जीवों की एक व्यापक श्रेणी के बारे में जानकारी मिल चुकी है जिनमें पौधे और पशु भी शामिल हैं.

बाहर से आनेवाले ऐसे समुद्री-जीवों के हमले से भारत के ७५०० किलोमीटर से भी लंबे समुद्री-तट और १२ प्रमुख बन्दरगाहों के सामने एक गंभीर चुनौती आ खड़ी हुई है. अंडमान-निकोबार और लक्षदीप जैसे द्वीपों की बहुमूल्य प्रवाल-शैलमालाओं (कोरल रीफ्स) को इनसे गंभीर खतरा हो सकता है. सीप की जाति का एक ऐसा जीव (मुसैल) मिला भी है जो विशाखापटनम और मुंबई के बन्दरगाहों पर हमला कर चुका है. यह जाति, उष्ण-कटिबन्धीय (ट्रॉपिकल) और उप-उष्णकटिबन्धीय (सब-ट्रॉपिकल) अटलाण्टिक महासागर के जल की रहनेवाली है और ऐसा माना जाता है कि इसने १९६० के दशक के दौरान भारतीय समुद्री-जल पर आक्रमण किया था.

इससे आपको क्या खतरे हो सकते हैं ?

समुद्री-जीवों के असर को, मुख्यतया तीन भागों में बाँटा जा सकता है :

पर्यावरण पर अनचाहा असर

बाहर से आयी हुई कुछ जातियां, देशी समुद्री-जीवों को तीव्रता से मिटा देती हैं या फिर उनका आहार छीन लेती हैं. परिणामवश, आहार-संरचना का स्वरूप बदल जाता है. अन्य जातियां, नयी बस्तियां बसाती हैं जो वर्तमान जीव-जन्तुओं को नष्ट करने की क्षमता रखती हैं जिससे देशीय जैविक-विषमता और आहार-संरचना का स्वरूप बदल सकता है, छिन्न-भिन्न हो सकता है. ऐसा अंदाजा लगाया गया है कि हर नौ हफ़्तों में समुद्री-जीवों की नयी जातियां, दुनिया में कहीं न कहीं एक नये वातावरण में आक्रमण करती हैं.

तटीय-उद्योग को होनेवाला आर्थिक नुकसान

समुद्री-तट से जुड़े उद्योग और अन्य व्यावसायिक गतिविधियों तथा संसाधनों पर समुद्री-जीवों की इन आक्रामक जातियों का विपरीत असर पड़ा है. ऐसी जानकारी मिली है कि इनके कारण, सिर्फ़ अमेरिका में ही हर वर्ष करोड़ों डॉलर्स का आर्थिक नुकसान हो जाता है.

सेहत पर असर, बीमारी फैलने का डर

जब विषैले समुद्री-जीव, रोग और पैथोजेन (रोगजनक-पदार्थ) बैलेस्ट वॉटर के ज़रिये नये वातावरण में प्रवेश करते हैं तो वे मनुष्यों में भी बीमारी फैलाते हैं. इनके प्रवेश का अनचाहा असर शेलफिश (खोलदार मछली), मछली, समुद्री पक्षियों आदि पर भी पड़ सकता हैं.

इस पर क्या-क्या कार्यवाही की जा रही है ?

१. जागरूकता-अभियान की शुरुआत हो चुकी है - इन-इन व्यक्तियों / संस्थाओं / उद्योगों के क्षेत्र में:

- पोत-परिवहन उद्योग (शिपिंग इंडस्ट्री)
- स्थानीय समुद्री-जीव-विज्ञान विशेषज्ञ
- समुद्रतटीय-निवासी
- मछली-उद्योग और संबंधित अन्य उद्योग
- बन्दरगाह अधिकारी
- गैर-सरकारी संस्थाएं (एन.जी.ओ.)
- शैक्षणिक संस्थाएं और सरकारी समितियां

२. जोखिम-निर्धारण कार्यक्रम (बैलेस्ट वॉटर रिस्क-असेसमेंट्स प्रोग्राम) की शुरुआत

३. सर्वेक्षण और शोध (पोर्ट बेसलाइन सर्वे एंड रिसर्च) की ज़िम्मेदारी

४. बन्दरगाह-अधिकारियों द्वारा कार्यपालन और निरीक्षण (कम्प्लाएंस एंड मॉनिटरिंग)

५. प्रशासन द्वारा वैधानिक कार्यान्वयन (लेजिसलेटिव इम्प्लिमेंटेशन)

इस बारे में अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :
श्री. संजॉय चक्रवर्ती, कंट्री फोकल पॉइंट, भारत.
डॉ. (श्रीमती) गीता जोशी, कंट्री फोकल पॉइंट असिस्टेंट, भारत.
ग्लोबल बैलेस्ट वॉटर मैनेजमेंट प्रोग्राम, जहाज भवन, वालचंद हीराचंद मार्ग, मुंबई ४०० ०३८
ई-मेल : sanjoy@dgshipping.com, geeta@dgshipping.com
वेबसाइट : www.globallastwaterindia.com

Global Ballast Water Management Programme
GEF
undp
IMO

www.siddharthads.com